International Journal of Advanced Innovation and Research
Vol 1, Issue 02, December 2023
ISSN: 2584-2129

INTERNATIONAL JOURNAL OF
ADVANCED INNOVATION AND RESEARCH
journal homepage: www.ijair.in

Saltanat Kaaleen Hariyaana mein Kuteer Udyogon ka Graameen Arthavyavastha mein Yogadaan (1206 to 1526 AD)

Dr. Raj kumar
Assistant Professor, Hindi, Shaheed Udham Singh Govt. College, Indergarh Road, Matak Majri Indri(Karnal)

Keywords

उत्कृष्टता,
सामंतवादी प्रणाली, कुटीर उद्योगों, हथकरघा,
नौसादर,

ABSTRACT

प्राचीन काल से हररयाणा कृषि प्रधान क्षेत्र रहा है। कृषि की उत्कृष्टता के कारण यहां के षनवाषसयों ने सदा ही राज्य की अथथव्यवस्था के रूप में मजबूती प्रदान की है। इसी संदभथ में हररयाणा में षवचाराधीन काल में ग्रामीण उद्योगों के माध्यम से अथथव्यवस्था को अषधक बढावा षमला षजससे यहां पर लगने वाले हाट बाजारों में स्थानीय षकसान अपने कृ िक व गैर कृषि उत्पादन को बेचते थे और स्थानीय व राष्टर ीय व्यापारी षवषभन्न सामानों को खरीद कर यहां की अथथव्यवस्था में महत्वपूणथ योगदान देते थे। इस क्षेत्र के अनेक गांव अपनी षवषभन्न वस्तुओं के उत्पादन में पहचान बना रहे थे। पुराने अंतरराष्टर ीय व राष्टर ीय मागों के स्थान पर नए मागथ बन जाने से नए गांव षवषभन्न मागों के नजदीक आने लगे।इस समय कुटीर उद्योगों का उद्भव होने व समय पररवतथन के साथ-साथ जातीय संकीणथता होते हुए भी टूटती हुई षदखाई देती है। सामंतवादी प्रणाली की स्थापना से भी यहां की अथथव्यवस्था में पररवतथन आ रहा था ।भू - कृ िक कृषि के साथ-साथ पशुपालन का कायथ करते थे। यहां के षकसान छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों जैसे नील, चीनी, हथकरघा, बतथन कायथ,चमथ कायथ, नमक, नौसादर, लकडी, ईट-पत्थर,घी, उत्पादन, शोरा व इत्र उद्योग से जुडे हुए थे। षजससे इस क्षेत्र के षनवाषसयों की अथथव्यवस्था में तो पररवतथन आया
बल्कि राज्य की आय में भी वृल्कि हुती। प्रस्तुत अध्याय में उपरोक्त सभी कुटीर उद्योगों का अध्ययन का प्रयास षकया जाएगा जो षक अथथव्यवस्था की दृषष्ट से काफी उपयोगी थे जो षक गांवों से उभरकर कस्ो ं में पररवषतथत हो गए। कुछ गांव जो की सल्तनत काल में कम जनसंख्या वाले थे अब वे कस्ो ं के रूप में उभरकर आए षजनमें मुख्यत: थानेसर,पानीपत, नारनौल, षहसार षसरसा, रोहतक, महम आषद थे।

विषय प्रस्तुवि :- प्राचीन काल से हररयाणा क्षेत्र की अथथव्यवस्था में कृषि के साथ-साथ कुटीर उद्योगों का महत्वपूणथ योगदान रहा है। सल्तनत कालीन हररयाणा क्षेत्र के षनवासी गांव तथा कस्ो ं में

अपनी पैतृक व्यवसाय में लगे रहे षकंतु उनके कार्यों को समाज में जाषत प्रथा की संकीणथता के कारण सम्मान प्राप्त नहीं था तथा उनके औजार पुराने थे। उनमें कोई षवशेि तकनीकी पररवतथन न आया था तेरहवीं शताब्दी के प्रारंभ में मोहम्मद गोरी के आक्रमणों के फलस्वरुप तुर्कों के रूप में भारत में एक नए शासक वगथ का उदय हुआ। नए शासकों की रूषच षशल्पकार जाषतयों के अपेक्षा
षशल्प उत्पादों पर अषधक थी*1 उन्ोंने जाषतगत बंधनों को लागू करने में भी उदासीनता षदखलाई तथा पूवथ सल्तनत काल में प्रचषलत अंतर को व्यवसाषयक गषतशीलता को षनयंषत्रत षकया। मध्य काल के दौरान हररयाणा क्षेत्र के समाज की गांवों व कस्ोें के रूप में उन्नषत हुई। गांव प्राय: एक दूसरे गांवों तथा कस्े से जुडे हुए थे। षजससे इस काल की अथथव्यवस्था का संबंध गांवों,कस्ोें व शहरों से था । कृषि फसलों के अषतररक्त ग्रामीण अन्य वस्तुओं को कस्ोें में ले जाकर बेचते थे। षजसमें मुख्यत: षमट्टी व धातु के बतथन, पंसारी वस्तुएं, लकडी की वस्तुएं कृषि उत्पादों से बनाया गया
सामान प्रमुख था। परंपरागत गांव समुदाय कृषि व षशल्पों के माध्यम से जुडे हुए थे जो षक गांव समुदाय का ढांचा थे। षशल्पी कृषि से अलग नहीं थे तथा वे ही घरे लू उद्योगों को प्राथषमकता देते थे। मुख्य परंपरागत घरे लू उद्योग गांवों में षकसानों द्वारा गांव की आवश्यकताओं की पूषतथ के षलए चलाए जाते थे। साप्ताषहक बाजार वस्तुओं को आदान- प्रदान करने के षलए लगाए जाते थे। छोटे पैमाने पर वस्तु उत्पादन दो रूपों में था। प्रथम षकसान हस्त षशल्प षद्वतीय व्यवसाषयक हस्तषशल्प । इन कलाकारों ने बडे पैमाने पर ग्रामीण क्षेत्रों तथा षवषशष्ट शहरी जनसंख्या का आषलंगन षकया जो की अथथव्यवस्था का महत्वपूणथ भाग अदा करता था।

ग्रामीण कुटीर उद्योग- ग्रामीण दस्तकारों को ग्राम समुदाय का सदस्य माना जाता था। कृषि उत्पाद से संबंषधत अनेक लघु व कुटीर उद्योग गांवों में प्रचषलत थे तथा श्रषमक षवषभन्न कार्यों के माध्यम से अथथव्यवस्थाको बढावा देते थे षजससे वे जातीय व्यवसाय के रूप में अपनाने लगे। इस काल में यहां षहंदू समाज में मुख्यतः चार वगों के अषतररक्त समाज में अनेकों जाषतयां तथा उपजाषतयां थी जो षक कृषि कार्यों के साथ-साथ अन्य छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों में संषलप्त थी। समाज का उच्च वगथ षकसी भी षशल्प में शाषमल नहीं था क्ोंषक उनका षवश्वास था षक उनकी जाषत के षनयमों में टकराव होगा। षशल्प तकनीक धीरे -धीरे षवकषसत हो रही थी षजसके पररणाम स्वरूप यहां अनेक जाषतयों का उद्भव हो रहा था। एक षपता से उसके पुत्र के पास उसका पुश्तैनी कायथ चला जाता था षजससे वह मेहनत
से अपने कायथ में षनपुण हो जाता था। ब्राह्मण, समाज का उच्च वगथ धन व षभक्षा की कोषशश करता था। आषथथक रूप से समाज को बढावा देने के षलए वे कोई कायथ नहीं करते थे लेषकन बदलती हुई समय की पररल्कस्थषतयों के अनुसार इस वगथ ने भी समाज की देखा देखी मे केवल अपने षहतों के
षलए काम धंधे अपनाने शुरू कर षदए। नाई गांव में औषध, घरे लू पशु षचषकत्सा, उत्सवों के अवसर पर संगीत करना, वैवाषहक दावतों पर भोजन तैयार करना, गांव समुदाय के सदस्यों के दूसरे गांव में समाचार पहुंचाना तथा गांव के उच्च वगथ के पररवार की हजामत आषद करना इनके कायथ थे। कुम्हार, धोबी,नाई की समाज में महत्वपूणथ भूषमका थी। वे जमीदारों के सहायक के रूप में भी कृषि कायथ
करते थे*1 ग्राम स्तर पर खेती तथा उद्योग धंधों का गठजोड स्थाषपत हो गया था। ग्राम स्तर पर अनेक छोटे-छोटे कुटीर उद्योग षनम्नषलल्कखत जो षक कृषि पर आधाररत थे।

नील उद्योग:-12वीं से 15 वीं शताब्दी के बीच में रंगरेजों का मुख्य व्यवसाय कपडा रंगना था हररयाणा के बाजारों तथा स्थानीय आपूषतथ के षलए हररयाणा क्षेत्र में कृिकों द्वारा मेवात, रेवाडी व नूंह में नील पैदा षकया जाता था। मेवात की नील की कीमत बयाना के नील से कम होती थी क्ोंषक
इस क्षेत्र का नील अच्छी षकस्म का न था। यह प्राय: बालू से पूणथ होता था। यहां के नील की
कीमत ₹20 प्रषत मांउड थी जबषक बयाना का नील ₹30 प्रषत मांउड था*2

रंगाई उद्योग:- इस क्षेत्र में काफी लोकषप्रय था क्ोंषक लोग चमकीले वस्त्र पहनने के शौकीन थे और नील की षवषभन्न षकस्में जैसे आसमानी, गहरा नीला, हिा नीला, काला नीला तथा बैंगनी आषद ग्रामीणों द्वारा तैयार षकया जाता था। पीला रंग हल्दी से षनचोडा जाता था। जो षक इस क्षेत्र में कृषि से प्राप्त होता था। इसके साथ-साथ अन्य रंग षवषभन्न रंगों को षमलाकर बनते थे। हल्दी में नीला रंग

षमलाने से हरा रंग बनता था। हरे रंग को अनार के षछलके के रस को षनचोड कर भी प्राप्त षकया जाता था। सूती कपडे को रंगरेजों द्वारा रंग षकया जाता था तथा षचत्र छापे जाते थे। षजसको पानी भी इसे धो नहीं सकता था* 3

गुड ि◌था चीनी उद्योग:- सल्तनत काल में हररयाणा क्षेत्र में गन्ना का कृषि उत्पादन में महत्वपूणथ स्थान था। हररयाणा क्षेत्र के षहसार सरकार के महम परगना में गन्ने का उत्पादन ग्रामीणों द्वारा षकया जाता था।षकसानों द्वारा गन्ने से बनाया गया गुड हररयाणा क्षेत्र में कुटीर उद्योग के रूप में
महत्वपूणथ था* 4 गन्ने से गुड व षमश्री बनाने की कला भी महत्वपूणथ थी।षनम्न वगथ के पररवारों तथा हलवाईयों द्वारा गुड का प्रयोग षकया जाता था। सामान्यत: गुड हररयाणा क्षेत्र के प्रत्येक कस्◌े में बनाया जाता था तथा इसकी आपूषतथ की जाती थी। शहरों में गुड की सप्ताषहक मंडी लगती थी
षजससे जनसंख्या का एक बडा भाग वाषणल्कज्यक तथा औद्योषगक केंद्◌ों के साथ बसने लगा। बडे-बडे औद्योषगक केंद् आषथथक रूप से कस्◌ों व शहरों से जुडने लगे।

हथकरघा उद्योग :- हररयाणा क्षेत्र में हथकरघा उद्योग भी काफी महत्वपूणथ था। षजसमें गांव के जुलाहोंद्वारा इसको चलाया जाता था। इससे न केवल गांव के षनवाषसयों की आवश्यकताएं पूरी होती थी बल्कि शहरों की भी आवश्यकताएं पूरी होती थी। हररयाणा क्षेत्र में कपास उत्पादन मुख्यतः षहसार, षसरसा, फतेहाबाद, जीदं क्षेत्र में अषधक होता था। षजसमें ग्रामीण षकसानों की महत्वपूणथ भूषमका होती
थी* 6 जुलाहों द्वारा दररया, गलीचे व चद्दरें इस क्षेत्र में बुनी जाती थी षजनकी काफी अच्छी मांग थी। इस प्रकार हररयाणा क्षेत्र में कृषि उत्पादन से संबंषधत अनेक कुटीर उद्योग थे षजन्◌ोंने अथथव्यवस्था को काफी बढावा षदया लेषकन गांवों में कुटीर उद्योगों के रूप में ग्रामीणों द्वारा गैर कृषि
उत्पादन भी षकया जाता था। जो षक ग्रामीणों की आवश्यकताओं की पूषतथ के साथ-साथ उनकी जीषवका के मुख्य साधन थे।

गैर कृवष उत्पादन:-
बितन कायत - हररयाणा क्षेत्र में बतथन उद्योग भी महत्वपूणथ था। गांवों में षकसान तथा षनम्न वगथ द्वारा प्राय: षमट्टी के बतथन प्रयोग षकए जाते थे जो षक गांव में ही कुम्हारों से प्राप्त होते थे। कुम्हारों द्वारा मेलों आषद के अवसरों पर भी बतथनों की प्रदशथनी लगाई जाती थी। जहां से अच्छे-अच्छे बतथनों को खरीदा जाता था। हररयाणा क्षेत्र का कोई घर या महल षबना षमट्टी के बतथनों के न होता था। बडे
षमट्टी के बतथन जैसे पानी रखने के मटके, घडे, सुराही,हांडी तथा ल्कखलौने कुजीगरों व कुम्हारों द्वारा बनाए जाते थे। बतथनों की षकस्मों के इलावा जग, गमले तथा अन्य छोटे-छोटे बतथन भी कुम्हारों द्वारा बनाए जाते थे जो षक षहंदुओं के त्योहारों में आम प्रयोग षकए जाते थे। यद्यषप सामाषजक रूप से कुम्हार का समाज में आदरणीय सम्मान न था। षफर भी ग्रामीण व शहरी समाज में महत्वपूणथ स्थान रखते थे। यद्यषप षमट्टी के बतथन हररयाणा क्षेत्र के प्रत्येक गांव में कुम्हारों द्वारा तैयार षकए जाते थे लेषकन झज्जर में बनी सुराषहयों की मांग काफी थी*7

चमत कायत :- चमथकार तथा अन्य लोगों के षलए गांव समुदाय का हस्तषशल्प में मुख्य योगदान था। जो षक गांव में अछूत समझे जाते थे। आषथथक व सामाषजक रूप से पद्दषलत लोग जो उच्च वगथ व षकसान वगथ द्वारा शोषित होते थे। समाज में चमथकारों की अनेक श्रेषणयां थी षजन्◌ें चमार, मोची तथा चकाती आषद नाम से जाना जाता था। इनका मुख्य कायथ चमडे के जूते बनाना, शराब के बतथन
बनाना,घोडे की जीन व साज सामान बनाना था। इस समय में चमथकार जागीरदारों तथा गांव के लोगों को षनषित संख्या में मुफ्त में जूते देता था। इस क्षेत्र में चमथकार सफाई के अषतररक्त कायथ भी करता था। ग्रामीण समुदाय के षनम्न वगथ के लोग बडे षकसानों के नौकर व द्वारपालों का कायथ भी करने लगे
थे तथा कृषि कायथ में भी सहायता करते थे। इनकी मजदूरी बढाई व लुहार के समान होती थी परंतु पहले से ही इनकी महत्ता पद् दषलत अछूतों के समान थी* 8

नमक उत्पादन :-हररयाणा क्षेत्र में नमक उत्पादन भी ग्रामीणों द्वारा षकया जाता था जो षक हररयाणा में सालम्भा तथा सुल्तानपुर से प्राप्त होता था षजनमें नूंह कस्ा के 12 गांव मुख्यतः मलाब, रानीका, अतका,बाई,खेरला, सालाहेडी, षफरोजपुर अहीर, षनजामपुर तथा सालम्भा में ग्रामीणों द्वारा बनाया जाता था। नमक बनाने की प्रषक्रया में कूओं से खारा पानी कृषत्रम जलाशयों में डाला जाता था जब यह भाप बनकर उड जाता था तो इसमें ज्वार या सन की झाडी डाली जाती थी तथा उसे रवेदार बनाकर 15 षदन तक रखा जाता था। जब झाडी को षनकाला जाता था तब इससे नमक उतार षलया जाता था। षकसानों द्वारा यह मंषडयों में बेचा जाता था षजसकी कीमत 2 से 5 माउंड थी। यह नमक आज भी उपरोक्त स्थानों पर बनाया जाता है।सुल्तानपुरी नमक झज्जर,झारसा तथा फरूथ खनगर परगनों में बनाया जाता था। इसके साथ साथ गुडगांव व रोहतक परगनों के गांवों में भी काफी नमक बनता था षजससे काफी बडी मात्रा में अथथव्यवस्था को बढावा षमला।*9

नौसादर :- यह थानेसर के आसपास के गांवों में ग्रामीणों द्वारा तैयार षकया जाता था* 10 जो षक पुराने आवें या ईंट के भट्टे के स्थान पर षमलती थी इसको शोरा की भांषत साफ षकया जाता था। नौसादर की कीमत 7:00 से 7:50 आना प्रषत मांउड थी।

लकडी उद्योग:- लकडी उद्योग भी इस क्षेत्र में काफी महत्वपूणथ था जो षक लकडी के षवषभन्न आकार स्थानीय श्रषमकों द्वारा बनाए जाते थे। यहां के षशल्कल्पयों की कलाकारी हररयाणा के पुरानी हवेषलयों के दरवाजों व ल्कखडषकयों में स्पष्ट झलकती है। बढई के प्रषसि कायथ पलंग तथा चारपाई बनाना, दरवाजे बनाना तथा अन्य कृिकों के औजार बनाना था। ल्कखजराबाद में लकडी का काफी कायथ होता था तथा हाट बाजार लगते थे। लकडी की बैठने की कुषसथयां व मूंढे गुडगांव के फरूथ खनगर में तथा लकडी के पांयों से चारपाईयां नारनौल में तैयार होती थी। चटाई व टोकरे षहसार में बनाए जाते थे।

ईंट ि पत्थर कायत:- आधुषनक काल ककी अपेक्षा मध्य काल में ईंट व पत्थर कायथ का ज्यादा षवकास न था। ग्रामीणों के घर प्राय: घास के बने होते थे। षजससमें मुख्यत: सरकंडे का प्रयोग षकया जाता था। लेषकन पक्की सामग्री राजकीय कार्यों में प्रयोग की जाती थी षजससे इस क्षेत्र में षकले, शाही महल, दफ्तर, मल्किदें, मकबरे, प्राथथना घर व हवेषलयां बनाई जाती थी। श्रषमक ईंट बनाने तथा पत्थर तराशने का कायथ करते थे। मजदूर काफी गरीब ल्कस्थषत में थे षजनका वणथन भारतीय भक्तों ने अपनी वाषणयों में षकया है। वे अपनी आजीषवका चलाने के षलए इन छोटे छोटे उद्योगों में कायथ करते थे। इस काल में श्रषमकों द्वारा मीनाकारी टाइलें व ईंटे बनाई जाती थी।

घी:- हररयाणा क्षेत्र में इस काल में के दौरान गैर कृषि उत्पादन में काफी अग्रणी था षजससे दूध व घी का उत्पादन यहां काफी मात्रा में होता था। यहां के प्रत्येक गांव व कस्े में पशुपालन का कायथ होता था। षजससे यहां के षनवासी अपने आहार में दूध व घी का अषधक प्रयोग करते थे। सल्तनत काल में हांसी व षहसार में घी का उत्पादन काफी मात्रा में होता था। षजसकी मांग केंद्ीय प्रशासन तक थी। इस क्षेत्र में चरागाह के षलए भूषम काफी मात्रा में उपलब्ध थी तथा लोग पशुपालन का धंधा करते थे तथा पशुओं के माध्यम से अपनी जीषवका चलाते थे। दूध व घी यहां से हररयाणा के अन्य भागों में षनयाथत षकया जाता था*12

शौरा उत्पादन:- 12वीं व 13वीं शताब्दी में स्थानीय लोगों द्वारा शोरा बनाया जाता था।हररयाणा क्षेत्र में शोरे के मुख्य केंद् नुंह तथा षफरोजपुर षझरकां थे। इसके अषतररक्त थानेसर वह कैथल के अनेक गांव से भी शोरा प्राप्त षकया जाता था षजसका प्रयोग बंदूक पाऊडर के षलए होता था। षवषभन्न जाषतयों के व्यल्कक्त जो शोरा बनाते थे। नूनेहे तथा शोरगीर कहे जाने लगे जो षक एक मुख्य जाषत बन गई। यह पानी व षमट्टी से बनाया जाता था जो षक षवशेि प्रकार की होती थी। कुओं से पानी को षमट्टी में डालकर खुले मैदानों पर छोडा जाता था तथा पानी को षफर धूप में सुखा षदया जाता था। षजस पर सफेद पाउडर की परत जम जाती थी और उसे अलग कर षदया जाता था।*13

उपसंहार:- इस प्रकार हम देखते हैं षक मध्यकालीन हररयाणा के अनेक गांवों में कुटीर उद्योग चलाए जा रहे थे जो षक अथथव्यवस्था को तो बढावा दे ही रहे थे इसके साथ-साथ शहरों की आपूषतथ भी कर रहे थे षजससे इनका अथथव्यवस्था में काफी महत्वपूणथ योगदान रहा।इस प्रकार सल्तनत कालीन हररयाणा के षवषभन्न गांवों में कुटीर उद्योग स्थाषपत थे जो षक स्थानीय षनवाषसयों की आवश्यकताओं के
साथ-साथ राज्य की अथथव्यवस्था की वृल्कि में काफी सहायक थे।*14
प्राचीन काल से हररयाणा क्षेत्र में अच्छी खेती रही है षजससे सल्तनत काल में षसरसा से अच्छे चावल उत्पादन के प्रमाण षमलते हैं षजसकी प्रशंसा इब्नबतूता ने की है*15 इसी प्रकार जब तैमूर ने हररयाणा क्षेत्र से अषभयान षकया तो उसने कैथलकरनाल व पानीपत के क्षेत्रों से काफी भारी मात्रा में गेहं का उल्लेख षकया षजसकी मांग देश के अन्य भागों में थी।

References

1. जनथल आफ एषशयाषटक सोसाइटी ऑण बंगाल,कोलकाता, 1935, भाग-1, पृष्ठ 197 -198
2. एनजयपालन., इकोनाषमक षहस्ट्र ी ऑण एषनषशयन्ट टू प्रजेंट, षदल्ली, 2001, पृष्ठ, 92
3. अबुल फजल, आईने अकबरी अंग्रेजी अनुवाद एच ब्लॉचमैन, भाग-1, पृष्ठ,16
4. जदुनाथ सरकार मुगल इकॉनमीवषकर् ग एंड ऑगेनाइजेशन :,कोलकाता 1978,पृष्ठ,26
5. डब्ल्यू मोरलैंड.एच., एग्रेररयन षसस्ट्म आफ मुल्किम इंषडया,षदल्ली,पृष्ठ, 47
6. डब्ल्यू मोरलैंड.एच.,एग्रेररयन षसस्ट्म आफ मुल्किम इंषडया,पृष्ठ,48
7. जदुनाथ सरकार,मुगल इक्नोमीवषकर् ग एंड ऑगेनाइजेशन:,पृष्ठ 34
8. पी ओझा.एन.,आस्पैक्ट्स ऑफ षमषडवल इंषडयन सोसायटी एंड कल्चर, षदल्ली, 1978, पृष्ठ, 136-137
9. पीओझा.एन., एस्पेक्ट्स आफ मेषडवल इंषडयन सोसायटी एंड कल्चर षदल्ली 1978 पृष्ठ 136 -137
10. वाल्टर हैषमल्टन, ए ज्योग्राषफकल स्ट्ैषटकल एंड षहस्ट्ोररकल षडल्किप्शन ऑफ षहंदुस्तान एंड एडजेे ेे ंकैन्ट कंटर ीज,लन्दन,1820, षदल्ली 1977 भाग 1 पृष्ठ 405-406
11. डब्ल्यूमोरलैंड.एच ., एग्रेररयन षसस्ट्म ऑण मुल्किम इंषडया,पृष्ठ,154 , जे : इक्नोमी मुगल . एन.
12. पृष्ठ वषकर् ग एंड ऑगेनाइजेशन34
13. शहाबुद्दीन अल उमरी,मसाषलक उल अबसार फी मुमाषलक अमसार, षहंदी अनुवाद सैयद अतहर अब्बास ररजवी, तुगलककालीन भारत,भाग-2 अलीगढ ,1960 पृष्ठ,312
14. षवषलयम फ्रैंकषलन , षमषलटर ी मेंमायथस ऑफ जॉजथ थॉमस,पृष्ठ ,39 शम्सअफीफ षसराज-ए-, तारीख- ए -
15. षफरोजशाही, षबल्कब्लओषथका इंषडका कोलकाता,1890,पृष्ठ, 333,
16. युसूफ हुसैन, मध्ययुगीन भारतीय संस्कृषत की एक झलक, षहंदी अनुवाद मोहम्मद उमर,अलीगढ,पृष्ठ,130
17. एमभागी.एल .,षमषडवल इंषडयन कल्चर एंड थॉट,अंबाला,1974,पृष्ठ 340
18. इब्नबतूता,यात्रा षववरण,षहंदी अनुवाद,सैयद अतहर अब्बास ररजवी, तुगलक कालीन भारत, भाग 1,पृष्ठ 169-170